बकरी प्लेग (पी.पी.आर.)

परिचय

- बकरी एवं भेड़ों में प्रचलित यह एक विषाणु जनित रोग है जो प्रभावित पशु में तेज ज्वर, दस्त और निमोनिया करता हैं और कई बार पशुओं की मृत्यु हो जाती हैं।
- रोग का कारक रिन्डरपेस्ट परिवार का विषाणु।
- बकरी में रोग की गम्भीरता भेड़ों की अपेक्षा अधिक होती है और 4–12 माह की आयु के मेमने रोग के प्रति अति संवेदनशील होते हैं।
- रोग की पशु प्रभावन दर 75–90% तथा मृत्युदर 70–80% तक हो सकती है।
- पी.पी.आर. रोगी पशुओं के संसर्ग से ही स्वस्थ पशुओं में आता है। इसके अतिरिक्त दूषित पानी एवं भोजन से भी रोग फैल सकता है।
- देश के विभिन्न राज्यों में यह रोग बकरी महामारी के नाम से भी जाना जाता हैं।
- यह रोग यदा–कदा जंगली पशुओं में भी पाया गया है।

पीपीआर से संक्रमित बकरी के मुँह में छाले

लक्षण

पीपीआर संक्रमित बकरी

- पी.पी.आर. रोग उग्र रूप में प्रकट होता है। इस रोग का निषेचन काल 3–6 दिन होता हैं।
- पीड़ित पशु में तेज ज्वर, भूख में कमी, आँख और नाक से पानी की तरह का स्राव देखा जा सकता हैं, जो बाद में गाढ़ा और चिपचिपा हो जाता है।
- श्वसन तंत्र के प्रभावित होने की स्थिति में श्वाँस लेने में कठिनाई होती है।
- होठों, मसूढ़ों, एंव गाल की भीतरी सतह और दोनों होठों के मिलने के स्थान पर तथा जीभ पर भी घाव बन जाते हैं।
- आँख की कन्जंक्टाईवा अत्याधिक लाल और उसमें अत्यधिक क्रीम जैसा स्राव देखा जा सकता है।
- प्रभावित पशु की पॉच से सात दिनो में मृत्यु हो सकती हैं।

पीपीआर संक्रमित बकरी में दस्त

चिकित्सा

- इस रोग की कोई निश्चित चिकित्सा अथवा उपचार उपलब्ध नहीं है।
- बहुप्रभावी ऐन्टिबायोटिक जैसे जेंटामाइसिन, इरीथ्रोमाइसिन, नियोमाइसिन या स्ट्रेप्टोमाइसिन आदि का प्रयोग चिकित्सा में मदद कर सकता है।
- ऐलर्जी रोधी, ज्वरनाशी एवं नासिका स्राव को कम करने वाली औषधियों का प्रयोग पीड़ित पशु को राहत प्रदान करता है।
- अधिक दस्त से शरीर में पानी की पूर्ति के लिए नार्मल सैलाइन का रक्त मार्ग से दिया जाना जीवन देने वाला साबित हो सकता हैं।
- निमोनिया होने पर 20 मि.ली. यूकेलिप्टस का तेल, 20 मि.ली. मेन्था का तेल, 20 ग्राम कपूर, 20 ग्राम अमोनियम कार्बोनेट, 230 ग्राम सौठ चूर्ण को 10 लीटर पानी में उबाल कर भाप दें।
- 10 ग्राम खाने का सोडा या 10 ग्राम अमोनियम कार्बोनेट, 5 ग्राम कपूर, 10 ग्राम सौंठ के चूर्ण को 100 ग्राम गुड़ के साथ मिलाकर खिलायें ।
- 50 ग्राम अजवाइन, 30 ग्राम सौंठ का चूर्ण तथा 20 ग्राम तुलसी पत्ती, 250 ग्राम गुड़ को 1–2 लीटर गुनगुने दूध में मिलाकर पिलायें।
- हल्की रोगावस्था में 100 ग्राम चावल माड़, 10 ग्राम खड़िया, 5 ग्राम नमक और 50 ग्राम गुड़ को मिलाकर खिलायें या शीशम पत्ती चूर्ण (20 ग्राम), बेल के फल का चूर्ण (10 ग्राम) मिलाकर दिन में दो बार दें या दही (100 मि.ली.), इसबगोल की भूसी (30 ग्राम) मिलाकर खिलायें या जौ का आटा (100 ग्राम), खड़िया (10 ग्राम), दही (100 मि. ली.) एवं गुड़ (50 ग्राम) मिलाकर खिलायें।

रोकथाम

- इस रोग की रोकथाम के लिए पी.पी.आर. का टीका अति प्रभावी है जोकि 1–3 वर्ष तक सुरक्षा प्रदान करता है।
- यह टीका पशु में चार माह की आयु में लगाया जाता है।
- बाड़े में साफ–सफाई का बंदोबस्त, नियमित कृमिनाशक का प्रयोग, सन्तुलित आहार पशुओं को रोग से बचा सकता है।
- पशुओं की आवाजाही को प्रतिबन्धित करके बीमारी को फैलने से रोका जा सकता हैं।

लेखक :

डॉ0 अशोक कुमार तिवारी, प्रधान वैज्ञानिक एवं विभागाध्यक्ष, जैविक मानकीकरण विभाग

डॉ0 त्रिवेणी दत्त, संयुक्त निदेशक (शैक्षणिक), समविश्वविद्यालय

डॉ0 रूपसी तिवारी, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी एटिक

भाकृअनुप ICAR

NAHEP

THE WORLD BANK
IBRD • IDA | WORLD BANK GROUP

कास्ट– एडवान्सड सेन्टर फॉर लाइवस्टॉक हैल्थ

भाकृअनुप–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, समविश्वविद्यालय, इज्जतनगर–243 122, उ.प्र.

IVRI

Printed by : ADIL-E-OFFICE MOB.: +91- 8395804304